देव्या होतारा भिषजा। पातिमन्द्र सचा सुते।
तिसस्त्रेधा सरस्त्रती। अश्विना भारतीडा। तीव पेरिस्ता सोमं। इन्द्राय सुषुवुर्मदं। अश्विना भेषजं
मधु। भेषजनः सरस्त्रती। इन्द्रे त्वष्टा यशः श्वियं।
रूप रूपमधुः सुते॥ च्यतुर्थेन्द्रो वनस्पतिः। शशमानः परिस्ता। कीलालमश्विभ्यां मधु। दुहे धेनुः सरस्तती। गोभिनं सोममश्विना। मा सरेण परिस्कृता। समधाताः सरस्वत्या। स्वाहेन्द्रे सुतं मधु
॥ ४॥

नमडुः पातवे सरस्वत्यधः सुतेऽष्टी च॥ अनु०१२॥

चरोादशोऽनुवाकः।

श्रिमा इविरिन्द्रियं। नमुचिधिया सर्खती। श्राश्रुक्रमासुराद्वसु। मधिमन्द्राय जिथिरे। यमश्रिमा सरस्तती। इविषेन्द्रमवर्ड्डयन्। स विभेद् बलं मधं। न-मुचावासुरे सचा। तिमन्द्रं प्रश्रवः सचा। श्रश्रिमा-भा सरस्तती॥ १॥

इन्द्रियं द्धः। सविता वर्षणा भगः। स सुनामा इवि-